सातवाँ अध्याय

''उपसंहार''

आदिम विकास के उपलब्ध साहित्यपर दृष्टिपात करें तो, निष्कर्ष में एक तथ्य यह दृष्टिगोचर होता है कि, मनुष्य की अभिव्यक्ति का आधार मौखिक ध्वनियाँ ही थी। कहने का तात्पर्य यह है कि, ध्वनि यह इतिहास जितना ही पुरानी मानी गयी है। ध्वनि का संबंध संगीत से पुरातन काल से जुड़ा हुआ है। यदि इसपर और दृष्टिपात करें तो यह महसूस होता है कि, संगीत में जितने स्वर को प्राधान्य दीया गया है, ठीक उतना ही प्राधान्य तबले के वर्णो को दीया गया है। अपितु, वर्ण जिसका दुसरा शाब्दिक अर्थ होता है, पटाक्षर। वर्ण यह एक होता है, किन्तु उससे अलग–अलग वर्णों को जोड़कर तबले की भाषा बनती है। किन्तु, इस भाषा पर यदि दृष्टिपात करें तो, इस भाषा का शाब्दिक अर्थ कुछ भी नहीं निकलता। परन्तु, उसके बाबजुद उन वर्णों को महत्व दीया गया हैं। स्वतंत्र तबला वादन में वर्णो का ही महत्व है, क्योंकि स्वतंत्र तबला वादन का मूलभूत अर्थ होता है– एकल तबला वादन, जो की एक तबलावादक अपनी कुशाग्र बुध्दि से एवं कठिन परिश्रम से अपनी कला की प्रस्तुति करता है। यह प्रस्तुति के समान वर्णों का अर्थात वर्णो से बनायी हुई रचना को ही निबध्द कर के अपनी कला की प्रस्तुति करता है। रियाज़ से संबंधित इस शोधप्रबंध में सर्व प्रथम उसके सत्य लगनेवाले तथ्योंपर आधारित स्पष्टीकरण किया गया हैं। प्रथम अध्याय का निष्कर्ष निकाला जाए तो, इस अध्याय में वर्णों को तथा उनके महत्व पर अधिक वजन देते हुए उसे उजागर करने का प्रयास किया गया है। यह प्रयास केवल शास्त्रपक्ष पर ही आधारित न होते हुए, क्रियात्मक पक्ष पर भी उजागर करने का प्रयास किया है। सर्वप्रथम, यह सिध्द किया गया है कि, स्वतंत्र तबला वादन करने से पूर्व हर तबलावादक को वर्णों की महत्वता समझना चाहिए। स्वतंत्र तबला वादन में कितने वर्णों का प्रयोग होगा, उन वर्णों कों सूक्ष्मता से अर्थात, बारीकाई से देखने का एक प्रयास करना चाहिए। यह वर्ण कौन से है? उनकी साहित्य की दृष्टि से कितनी महत्वता है? अर्थात

ऱ्हस्व–दीर्घ, आकार–उकार की भी चर्चा की गयी है। वर्ण एवं रियाज़ इसका क्या परस्पर संबंध रहा है? इस पर भी दृष्टिपात करने का प्रयास किया गया है। वर्ण एवं रचनाएँ या बंदिशे पर भी दृष्टिपात किया गया है। शोधार्थी का मत है की, वर्ण एवं अक्षर एक ही है किन्तु, अक्षर संख्या से शब्दों की निर्मिति होती है और इन्हीं शब्दों से यदि सौंदर्यात्मक दृष्टिकोन पर विचार विमर्श करने के बाद जो रचनाएँ प्रस्तुत की जाती है, वहीं स्वतंत्र तबलावादन हैं। वर्ण एवं रियाज़, दोनों का क्या परस्पर संबंध रहा है? तो शोधार्थी का कथन है कि, जब तक वर्णों का शास्त्रशुध्द रियाज न करें, तब तक किसी रचना को या किसी बंदिश को पेश करना असंभव रहेगा।

शोधार्थी ने यह पाया है कि, रियाज़ करने से पूर्व वर्णो कों भली–भाँति जानना जरूरी है। अर्थात, उसके निकास, उसका नाद और निकास एवं नाद का परस्पर संबंध महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एक अच्छा रियाज़ करने के लिए वर्णो की पूर्णरूप से जानकारी लेना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यदि, वादक में यह दुर्बलता दिखायी दे तो स्पष्ट रूप से मान लेना चाहिए की, उसका वर्णों का अभ्यास कम दिखाई देता है। वर्णो का रियाज़ ही एक अच्छी बंदिश को प्रस्तुत करने मे सहाय्यक बनती है। अपितु, एक स्वतंत्र तबलावादन में उत्कर्ष स्वतंत्र तबला वादन करने में फलदायक रहती है। इसी कारण, इस अध्याय में वर्णो पर पूर्णरूप से प्रकाश ड़ाला गया है।

इस अध्याय का, सारांश यह है कि रियाज़ करने के लिए वर्णों की तपश्चर्या करना अनिवार्य होता है या साधना करनी आवश्यक होती है।

द्वितीय अध्याय में दृष्टिपात करें तो, रियाज़ पर पूर्णरूप से जानकारी देने का अत्यंत कष्टसाध्य एक प्रयास किया गया है। अर्थात, वह रियाज़ कैसा हो? उसकी परिभाषा कैसी होनी चाहिए? मूलभूत इसका अर्थ क्या होना चाहिए? क्या इसका संबंध केवल संगीत से ही जुड़ा हुआ है? या दैनंदिन काल मे अनेक क्रियाओं पर आधारित है? उसका स्पष्टीकरण किया है। शोधार्थी का कहना यह है कि, संगीत में केवल रियाज़ ही प्राप्त की हुई गुरूमुखी विद्या को सफल कलाकार बनाने में महत्वपूर्ण भुमिका बनाता है, अर्थात रियाज़ का अर्थ मंथन करना या किसी चीज को दोहराना, अर्थात यह क्रिया प्रत्यक्ष रूप से करने से जो अनुभूति होती है, वह शब्दों

में लिखना या ठोस विधान देना एक कठिनाई महसूस होती है। क्योंकि, रियाज़ यह करनेवाली चीज है। यह रियाज़ कैसे करना चाहिए? क्या उसके लिए समय की पाबंदी होनी चाहिए? बैठक व्यवस्था कैसी होनी चाहिए? मन के विचार या मन का संतुलन, एकाग्र चित्त मनन, चिंतन कितना आवश्यक है? इस पर भी प्रकाश डालने का एक प्रयास किया है। अपितु, कुछ अनुभव, साक्षात्कार और लेखी–जोखी सामग्री को देखते हुए, यह अनुभूती होती है की, रियाज़ का संबंध एक निश्चित समय होना चाहिए, उसके लिए शरीर की बैठक, हावभाव एवं अन्य कई बाते रियाज़ के लिए महत्वपूर्ण मानी गयी है। संगीत का रियाज़ कलाकार के लिए एक पवित्र क्रिया है, इसलिए साधक का शुध्द भाव एवं शुध्द आचार–विचार होना अत्यंत आवश्यक है। इस अध्याय मे, यह भी बतलाया है की, केवल मजदूरी न करते हुए उसे अच्छी तरह से जानकर यदि रियाज़ किया जाता है, तो वह साधक अपनी कला में एक श्रेष्ठ कलाकार का मान सन्मान प्राप्त करता है तथा समाज में एक रियाज़ी कलाकार तथा उच्च कोटि का एवं उच्च विचारों का कलाकार माना जाता है। साधक ने रियाज़ हेतु, प्रथम अपनी भुमिका योग्य बनाते हुए साधक की शारीरिक, मानसिक और बौध्दिक उपस्थिती रखना अनिवार्य है, तथा इन तीनों अवस्थाओं का अनुभव साधक ने अपने रियाज़ में लेना आवश्यक होता है, ऐसा शोधार्थी का मत है।

स्वतंत्र तबला वादन में अपनी प्रस्तुति करने के लिए कलाकार एक अनन्य साधना करता है। इसी साधना को एक सौंदर्यात्मक दृष्टिकोन से अपनी कला की प्रस्तुति करता है। यहीं प्रस्तुति रियाज़ पर निर्भर होती है। संगीत में यदि, दृष्टिपात करे तो गायन–वादन एवं नृत्य इन तीनों कलाओ में साधना या कठोर परिश्रम करना ही पड़ता है। किन्तु, हमारा विषय वादन से जुड़ा हुआ है। अब वादन में भी बहुत से प्रकार होते है–घनवाद्य, सुषिरवाद्य, तत्वाद्य एवं अवनध्द वाद्य। हमारा शोधप्रबंध अवनध्द वाद्यों से जुड़ा हुआ होने के कारण क्यों न अवनध्द वाद्य पर प्रकाश ड़ाला जाये? यदि हम उन अवनध्द वाद्यो मे, तबलें पर दृष्टिपात करे तो, यह वाद्य सबसे कठिन वाद्य माना गया है। एक सुर वाद्य सभी लोगों को आकर्षित करता है, उसका कारण 'रियाज' ही हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि, तबला वादन कला मे रियाज़ का कितना महत्व है? यदि वादन प्रणाली को या विधिवत वादन पध्दति को प्रकाश ड़ाला जाये तो स्वतंत्र तबला वादन की हर

रचनाएँ रियाज़पर निर्भर है। यदि उन स्वतंत्र तबला वादन में बजनेवाली हर रचनाओं पर स्वतंत्र रियाज़ किया जाये तो, कलाकार अपनी कला की प्रस्तुति एक अलग ही ढंगसे करता है। इस अध्याय मे, निष्कर्ष पर दृष्टिपात करें तो यह दिखाई देता है की, हर रचना को पेश करने के लिए अपनी कुशाग्र बुद्धि से मनन, चिंतन करके चिल्ला बांधने की एक जरूरत पड़ती है। यदि, इस प्रकार वह नहीं करता है तो, सफल कलाकार वह कदापि बन नहीं पाता है। चिल्ला पध्दति से रियाज़ के दरम्यान साधक को अनेक परिणाम प्राप्त होतें हैं, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है। चिल्ला अर्थात किसी रचना को कई घंटों तक चालीस दिन विभिन्न लयकारी में बजाते रहना, यहीं चिल्ले की सही संज्ञा है। स्वतंत्र तबला वादन के लिए रियाज़ का महत्व इसलिए है की, रियाज़ करने से कलाकार को अपनी गलतियाँ समझ में आती है तथा नए–नए विचार सुँझते है, जो स्वतंत्र तबला वादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सैध्दांतिक रियाज याने बौध्दिक रियाज़। व्यवहार में सिध्दांत का अर्थ होता है नियम, अनुशासन। तबले के विषय में विचार किया जाए तो, तबले के शास्त्र पक्ष के आधार पर तबले की सभी संकल्पनाओं का तथा विविध घरानों का किया गया विचारपूर्वक अध्ययन याने सैध्दांतिक रियाज। तबले के सैध्दांतिक पक्ष का मुलभूत आधार होता है– बौध्दिक पक्ष पर किया गया अध्ययन। तबले के शास्त्र पक्ष को बुध्दिद्वारा भली–भाँति समझकर किया गया विचारपूर्वक अध्ययन ही बौध्दिक रियाज होता है, ऐसा शोधार्थी का मत है। तबले के विविध रचना एवं रचना प्रकारों को पढ़ना, ठेकों की लयदार पढंत, लय–लयकारी की पढंत, आदि क्रियाओं को 'तबले की पढंत' कहा जाता है। शोधार्थी का मानना है की, साधक ने इस 'पढंत' रूपी बौध्दिक रियाज़ का स्वीकार करते हुए तद्अनुसार आचरण करना चाहिए। 'पढंत' यह तबले के सैध्दांतिक रियाज़ का मूलभूत और महत्वपूर्ण संस्कार है। पढंत के जरिए बुध्दिपर योग्य संस्कार होते है तथा संबंधित रचना भी बुध्दि में चिरंतन बन जाती है। साधक का यह मानसिक (Mental) रियाज़ है, ऐसा कहना उचित होगा। पढंत यह साधक की वैचारिक कृति है, जिसकी आचरित कृति होती है– 'बजंत'। प्रभावी बजंत की अभिव्यक्ति होती है 'पढंत'। इसतरह देखा जाए तो, तबले के सैध्दांतिक रियाज़ के पक्ष में पढंत का स्थान अन्यतम् है।

बौध्दिक रियाज़ की इसी महत्वता को देखते हुए, शोधार्थी ने प्रस्तुत, 'सैध्दांतिक रियाज' इस अध्याय को अपने प्रबंध का केंद्रबिंदु माना है। शोधार्थी का यह मत है कि, साधक ने क्रियात्मक रियाज़ के पूर्व सैध्दांतिक रियाज़ को याने बौध्दिक रियाज़ को अपना केंद्रबिंदु बनाते हुए अपना बौध्दिक पक्ष प्रथम प्रबल करना अत्यंत आवश्यक है। साधक ने तबले के रियाज़ का सर्वांगीण दृष्टिकोन से विचार करते हुए सैध्दांतिक पक्ष को महत्व देना चाहिए। शोधार्थी का मानना है कि, तबले के रियाज़ का यही सही सिध्दांत है। तबला साधक के रियाज़ का केंद्रबिंदु सैध्दांतिक रियाज़ होना चाहिए, ऐसा शोधार्थी का मत है। सारांश, तबला साधक ने अपने रियाज में बौध्दिक पक्ष के अंतर्गत पढंत को महत्व देना जरूरी है। 'पहले पढंत और फिर बजंत' के सूत्र में किया गया तबले का रियाज़ निश्चित रूप से फलदायी होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। सचमुच, तबले के रियाज़ में बौध्दिक पक्ष के प्रमुख आधारपर किया गया साधक का सैध्दांतिक रियाज़ ही, साधक के 'विचारोंका रियाज' होता है, जो महत्वपूर्ण है और इसी से तबला साधक, अपनी कला की प्रस्तुति करने के लिए योग्य बन पाता है।

भारतीय संगीत में क्रियात्मक पक्ष को अधिक प्रदानता दी है। यहीं कारण रहा है कि, क्रियात्मक पक्ष को सैध्दांतिक रूप प्रदान करने का पक्ष दुर्बल रहा, किन्तु विष्णुद्वय के सफल प्रयासों से सैध्दांतिक पक्ष को सजीव किया। इतिहास पर दृष्टिपात करे तो, रियाज़ के बारे में एवं उसकी सैध्दांतिक पक्ष की लेखी–जोखी जानकारी या परिभाषा आदि का लिखित ब्यौरा ना के बराबर था। जो भी था वह न तो तथ्यों के आधारपर था और न सच लगने वाला था। किन्तु, शोधार्थी ने इसी शोधप्रबंध में सैध्दांतिक पक्ष को परिभाषित कर उसे उज़ागर करने का एक अत्यंत कष्टसाध्य प्रयास किया हैं। सैध्दांतिक पक्ष की जानकारी केवल एक ही घराने से संबंधित न होते हुए इसमें सभी घरानों को समेटने का प्रयास किया गया है। अर्थात, विभिन्न घरानों के कलाकारों का विविध माध्यमसे साक्षात्कार या पाद–टिप्पनियाँ या अन्य तकनीक से परिभाषित किया गया है। इसमें क्रियात्मक पक्ष को सामने रखते हुए, यह रियाज़ कैसे करना चाहिए? या तबला वादन में प्रस्तुत होनेवाली सभी रचनाओं को बारीकाई से गहन अध्ययन करके उसे सौंदर्यात्मक दृष्टिकोन से तथा निकास पध्दति पर ही ध्यान देकर उसे उज़ागर करने का प्रयास किया गया है।

क्रियात्मक पक्ष तबला वादन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे न केवल कलाकारों को और न केवल शास्त्रकारों को इसकी जरूरत पडती है, अपितु इसकी जरूरत सभी को पड़ती है। क्रियात्मक पक्ष को सामने रखते हुए शोधार्थी रियाज़ पर काफी कुछ लेखी–जोखी जानकारी पिछले चार अध्यायों मे दे चूँका है। किन्तु, उसे ऐसा महसूस हुआ की, इसे क्यों न क्रियात्मक पक्ष पर अधिक वजन दीया जाए? इसी कारण शोधार्थी ने इस अध्याय में तथा अगले अध्याय मे तबले की रियाज़ पंक्तियों की कुछ सामग्री (रचनाएँ) पं. भातखंडे पद्धति में लिपीबध्द करने का एक प्रयास किया है। किन्तु, इन अलग–अलग रचनाओं के माध्यम से किसी शोधार्थी या शिक्षक या अन्य विद्यार्थी इसे समझ पाए तथा यदि, वह एक सफल कलाकार बनने के लिए रियाज़ करें तो यह शोधप्रबंध उसे मदद्रूप हो सकता है। इसके साथ–साथ यदि, विभिन्न घरानो की बातें करे तो हम सभी भली–भाँति जानते है की, हर घरानें की अपनी विशेषता, निकास पद्धति, बजाने का ढ़ंग, क्रमशः वादन पद्धति अलग रही है। इसी कारण, तबले में छह घरानों का महत्व रहा है। यदि, इस शोधप्रबंध से यह भी उजागर करने का प्रयत्न किया है की, केवल एक ही घराने को सामने रखते हुए यदि, कोई जिज्ञासु विद्यार्थी अपना रियाज़ करना चाहे तो भी वह इस शोधप्रबंध का लाभ उठा सके। इस विषय से संबंधित सभी प्रकारों के तथ्यों को प्रस्तुत करने के पश्चात यह सिध्द नहीं होता की, संबंधित भविष्य में शोध की संभावनाएँ क्षीण हुई है, अपितु, यह और उज़ागर हुई है। मेरा उन विद्यार्थीयों से नम्र निवेदन है कि, जो रियाज़ पर अधिक शोध करना चाहे तो इस प्रबंध में यदि कुछ रह गया हो तो, निश्चित ही अपने शोध प्रबंध द्वारा वह उद्घटित कर सकता है।

शोधार्थी ने अपनी बुध्दि से एवं प्रयत्न से जितना हो पाया या जो सामग्री इकट्ठी हुई उसें उजा़गर करने का प्रयास किया है। अपितु, यदि इस शोधप्रबंध में कोई त्रुटी दिखाई दी तो उसें बड़े मन से स्वीकार करें, शोधप्रबंध को सुधारने में अत्यंत कष्टसाध्य प्रयत्न किया जाएगा।